प्रत्यभिज्ञा दर्शन और आधुनिक मनोविज्ञान के सामंजस्य से सुलझ सकती हैं मस्तिष्क की गुत्थियां

The Brain's mysteries can be solved by the harmony of Pratyabhijna Philosophy and Modern Psychology

डॉ. राज नेहरू
Dr. Raj Nehru
Vice Chancellor, Shri Vishwakarma Skill University, Palwal, Haryana
vc@svsu.ac.in
https://doi.org/10.5281/zenodo.15562267

हमारी प्राचीन बौद्धिक सम्पदा महानता की पराकाष्ठा है। आधुनिक ज्ञान और शोध बार-बार इन तथ्यों को परिष्कृत करते हैं। यह सर्वथा सार्थक तथा सर्वकालिक सिद्ध होते हैं। कश्मीरी शैव दर्शन इसका अभिनव उदाहरण है। इसके अंतर्गत प्रत्यभिज्ञा दर्शन अत्यंत अनुपम है। मैंने आधुनिक मनोविज्ञान और प्रत्यभिज्ञा, दोनों का अध्ययन करने के पश्चात कई महत्वपूर्ण तथ्यों का विश्लेषण किया। लगभग दो दशक पहले आईबीएम में काम करते हुए मेरा सिंगापुर जाना हुआ। इस दौरान मुझे हेरमैन ब्रेन डोमिनेंस इंस्ट्रूमेंट (एचबीडीआई) में सर्टिफाइड होने का अवसर मिला। वर्ष 2005 में मैं सर्टिफाइड ट्रेनर बना और मुझे 5000 से अधिक लोगों को 'स्व चेतना' की यात्रा में प्रशिक्षित करने का अवसर प्राप्त हुआ। एचबीडीआई शोध पर आधारित अद्भुत साइकोमेट्रिक इंस्ट्रूमेंट है। यह उपकरण मनुष्य की मस्तिष्क वरीयताओं का आकलन करता है। दरअसल डॉ. रोजर स्पेरी ने दुनिया को दाएं एवं बाएं मस्तिष्क का स्प्लिट-ब्रेन सिद्धांत दिया। इसके अनुसार हमारे मस्तिष्क के दोनों गोलार्ध अपना-अपना काम करते हैं। एचबीडीआई अनुभवजन्य अनुसंधान पर आधारित है। इस शोध को नेड हेरमैन ने आगे बढ़ाया। शोध में पाया गया है कि दायां मस्तिष्क अधिक सहानुभूतिपूर्ण और सहज ज्ञान युक्त होता है, जबकि बायां मस्तिष्क किसी व्यक्ति की विश्लेषणात्मक और संरचित प्राथमिकताओं पर आधारित होता है।

उदाहरण के तौर पर मुझे याद है आईबीएम में हमारे पास एक अत्यधिक कुशल सॉफ्टवेयर इंजीनियर था। उन्होंने जटिल कोड, सॉफ्टवेयर और प्रोग्रामिंग में उत्कृष्टता हासिल की। उनके बाएं मस्तिष्क का प्रभुत्व एल्गोरिथ्म का विश्लेषण करने, तार्किक त्रुटियों की पहचान करने में स्पष्ट था। हालाँकि, जब उन्हें इंटरफेस डिजाइन और रचनात्मक समाधानों का जिम्मा सौंपा तो वह अपेक्षित कुशलता से काम नहीं कर पाए। स्पष्ट है मानव मस्तिष्क अपने दाएं और बाएं गोलार्ध की क्षमताओं के अनुरूप ही कार्य करता है। एचबीडीआई की लोकप्रियता हाल के वर्षों में बढ़ी है। मस्तिष्क आधारित संचार और व्यूह रचनाओं से लेकर नवाचार सहित विविध आयामों का आकलन इस विधि से किया जाने लगा है। यह उपकरण किसी की संज्ञानात्मक प्राथमिकताओं को समझने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे लोगों को अपनी क्षमता का लाभ उठाने और चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में मदद मिलती है।

एचबीडीआई के अध्ययन के पश्चात् मैं कश्मीर के शैव मत के प्रत्यभिज्ञा दर्शन की ओर आकर्षित हुआ। मैंने प्रत्यभिज्ञा पर आधारित ग्रंथों का अध्ययन किया और पाया कि दोनों में गहरा संबंध है और बहुत सी विशिष्ट समानताएं भी। स्व चेतना की खोज में यह प्राचीन एवं प्रमाणिक दर्शन है। प्रत्यभिज्ञा कश्मीरी शैव दर्शन का अनिवार्य अंग है और त्रिखा दर्शन का एक अहम स्तंभ है। इसे आचार्य सोमानंद ने प्रतिपादित किया और बाद में आचार्य उत्पलदेव, आचार्य अभिनवगुप्त और आचार्य खेमराज द्वारा विकसित किया गया। प्रत्यभिज्ञा दर्शन मुख्य रूप से चेतना, आत्म-जागरूकता और वास्तविकता की प्रकृति की समझ से संबंधित प्रश्नों पर चर्चा करता है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन सचेत जागरूकता और वास्तविकता की प्रकृति से जुड़े प्रश्नों का समाधान देती है। यह लोगों को उनकी मूल मान्यताओं,

मूल्यों और धारणाओं की समीक्षा करने, आत्मनिरीक्षण और आत्म-मंथन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। मैं कौन हूँ? मैं अपने बारे में और अपने आस-पास की दुनिया के बारे में क्या विश्वास करता हूँ? प्रत्यभिज्ञा हमें यह चेतना प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। प्रत्यभिज्ञा प्रकाश और विमर्श की अवधारणाओं को और विस्तृत करती है, जो चेतना की प्रकृति और आत्म-जागरूकता की प्रक्रिया पर प्रकाश डालता है। प्रत्यभिज्ञा की प्रकाश और विमर्श की अवधारणाएँ क्रमशः दाएं और बाएं मस्तिष्क गोलार्धों से जुड़े कार्यों को प्रतिबिंबित करती हैं। प्रकाश आंतरिक रोशनी और समग्र धारणा का प्रतिनिधित्व करता है, जो दाहिने मस्तिष्क से जुड़ी जानकारी के सहज प्रसंस्करण के समान है। दूसरी ओर, विमर्श, बाएं मस्तिष्क की संरचित सोच के समान, बाहरी दुनिया और विश्लेषणात्मक प्रसंस्करण के साथ जुड़ाव को शामिल करता है।

शैव दर्शन में शिव और शक्ति को चेतना के दो अविभाज्य आयामों के रूप देखा जाता है। शिव व्यक्ति के भीतर चेतना और स्थिरता के शाश्वत एवं नैसर्गिक स्रोत का प्रतीक है, जबकि शक्ति गतिशील रचनात्मक शक्ति की द्योतक है। शिव और शक्ति का यह सामंजस्य स्थिरता और गतिशीलता के बीच संतुलन साधते हुए समग्र अस्तित्व की ओर ले जाता है। प्रकाश और विमर्श की क्रिया का अध्ययन करने के लिए ज्ञान की प्राचीन परम्परा तथा एचबीडीआई मॉडल के आधुनिक स्वरूप के बीच समानताएं तलाशनी जरूरी हैं। इससे मस्तिष्क के दाएं और बाएं गोलार्ध के बीच के अंतर को समझने और स्पष्ट करने में अभूतपूर्व सफलता मिल सकती है।

प्रत्यभिज्ञा और एचबीडीआई के बीच समानताएं आश्चर्यजनक हैं। दोनों अलग-अलग सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से, आत्म-खोज और स्व चेतना के महत्व पर बल देते हैं। इस अध्ययन यात्रा में मैंने चेतना पर अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डोनाल्ड हॉफमैन के मत का विश्लेषण किया। यह प्रत्यभिज्ञा के सिद्धांतों के साथ मेल खाता है। हॉफमैन का मानना है कि चेतना वास्तविकता के लिए मौलिक है। यह धारणा प्रत्यभिज्ञा के इस विचार से मेल खाती है कि व्यक्तिगत चेतनाएं मानसिक संरचना के आधार पर वास्तविकता का निर्माण करती हैं। चेतना पर उनके विचार प्रत्यभिज्ञा और कश्मीर शैववाद में पाई जाने वाली अवधारणाओं से काफी समानता रखते हैं। मैंने अपने अध्ययन और विश्लेषण में पाया कि एचबीडीआई जैसे समकालीन मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के साथ प्रत्यभिज्ञा दर्शन के एकीकरण में अपार संभावनाएं हैं। प्राचीन ज्ञान को आधुनिक अंतर्दृष्टि से जोड़कर, हम मन और चेतना की अपनी समझ को गहरा कर सकते हैं। व्यक्तिगत विकास और परिवर्तन के लिए नए रास्ते खोल सकते हैं। यह आधुनिक विचारकों को कश्मीर की बौद्धिक विरासत के साथ जुड़ने और प्रत्यभिज्ञा के कालातीत ज्ञान का पता लगाने का एक समृद्ध अवसर प्रदान करता है।

एचबीडीआई और प्रत्यभिज्ञा दर्शन के माध्यम से आत्म-जागरूकता की प्रकृति को खोजा जा सकता है। इन दृष्टिकोणों को एकीकृत करके, हम मन की कार्यप्रणाली में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और मानव अनुभूति की पूरी क्षमता को ज्ञात कर सकते हैं। इन दोनों आधुनिक मनोविज्ञान के सिद्धांत और प्राचीन दर्शन के सिद्धांत का सामंजस्य हमें स्व को जानने की अद्‌भुत यात्रा पर ले जा सकता है। इससे हमारी अंतःकरण के संदर्भ में समझ और विकसित होगी। इस अध्ययन से यह भी अवधारणा स्पष्ट हुई है कि प्राचीन ज्ञान और समकालीन मनोविज्ञान के बीच एक सेतु स्थापित करना सम्भव है। इसी से व्यक्तिगत विकास और ज्ञान का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। समकालीन मनोवैज्ञानिक ढांचे के साथ शैव दर्शन वास्तव में कश्मीरियों और कश्मीर की समृद्ध बौद्धिक विरासत में रुचि रखने वालों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि और गर्व की भावना भर सकता है।

❐